Vani-Gitika

वाणी-गीतिका

Document Information

Text title : Vani Gitika (Song for the Goddess of Speech)

File name : vANIgItikA.itx

Category : devii, sanskritgeet, sarasvatI, hkmeher

Location : doc_devii

Author : Harekrishna Meher meher.hk at gmail.com

Transliterated by : Harekrishna Meher

Proofread by : Harekrishna Meher

Description/comments : M□t□ig□tik□□jalih

Acknowledge-Permission: Dr. Harekrishna Meher

Latest update : October 26, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

October 26, 2023

sanskritdocuments.org

वाणी-गीतिका

कवि-जननी त्वं
शतदल-निवासिनी,
भव-शमनी त्वं
सुविमल-सुवासिनी ।
शतदल-निवासिनी ।
सुविमल-सुवासिनी ॥ (ध्रुवम्)॥

हृदि मम शारदे ! रचय निजालयम्,
सुमति-विशारदे ! वितर शुभाशयम् ।
अयि मातः सारदे !
प्रणतिरियं श्रीपदे ।
अघ-दहनी त्वं
जड़-बल-निरासिनी,
प्रोज्ज्वल-विभासिनी ।
कवि-जननी त्वं
शतदल-निवासिनी ।
सुविमल-सुवासिनी ॥ १॥

तव कृपया सदा नश्यतु तामसम्,
ज्योतिःसम्पदा दीव्यतु मानसम् ।
भगवति हे सारदे !
प्रणतिरियं श्रीपदे ।
नव-कवनी त्वं
बुध-गल-विलासिनी,
मङ्गल-विकासिनी ।
कवि-जननी त्वं
शतदल-निवासिनी ।

सुविमल-सुवासिनी ॥ २॥

त्वमसि सरस्वती कमल-समर्चना,
सुललित-भारती सुमधुर-मूर्च्छना ।
धृत-वीणे सारदे !
प्रणतिरियं श्रीपदे ।
सन्मिलनी त्वं
कश्मल-परासिनी,
कोमल-सुहासिनी ।
कवि-जननी त्वं
शतदल-निवासिनी ।
सुविमल-सुवासिनी ॥ ३॥

न भवतु मे मति-र्विपदि समाकुला,
प्रसरतु मे गति-र्वाङ्मय-मञ्जुला ।
जय जय हे सारदे !
प्रणतिरियं श्रीपदे ।
काव्य-वनी त्वं
पेशल-समासिनी,
प्राञ्जल-सुशासिनी ।
कवि-जननी त्वं
शतदल-निवासिनी ।
सुविमल-सुवासिनी ॥ ४॥

प्रणवमयाक्षरे ! नन्दय सादरम्,
स्फटिक-स्रग्धरे ! विन्दय सुन्दरम् ।
दह दुरितं सारदे !
प्रणतिरियं श्रीपदे ।
शं-वहनी त्वं
परिमल-निकासिनी,
पुष्कल-कला सिनी ।
कवि-जननी त्वं
शतदल-निवासिनी ।
सुविमल-सुवासिनी ॥ ५॥

– रचना : **डॉ हरेकृष्ण-मेहेरः**
(“**मातृगीतिकाञ्जलिः**” - **काव्यतः**)

Copyright Dr.Harekrishna Meher

Vani-Gitika
pdf was typeset on October 26, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*